

स्टीफन हॉकिंग का एक साक्षात्कार निर्जन द्वीप में संगीत

प्रसिद्ध ब्रिटिश भौतिकविद् स्टीफन हॉकिंग का प्रस्तुत इंटरव्यू उनकी किताब *black holes and baby universes and other essays* से साभार लिया गया है। बैंटम बुक्स प्रकाशन से ये किताब 1993 में प्रकाशित हुई थी। इसी किताब में हॉकिंग ने ब्रह्मांड से जुड़े अपने अध्ययनों को रोचक अंदाज़ में प्रस्तुत किया है। इसमें कुछ व्याख्यान भी हैं और वो महत्वपूर्ण लेख भी जिसमें हॉकिंग ने आइंस्टाइन की दुविधाओं पर उगुली रखी है। ये इंटरव्यू हमें न सिर्फ एक महान विज्ञानी और चिंतक के रचना संघर्ष के बारे में बताया है बल्कि ये हमें कला की उन उद्दाम ऊंचाइयों की झलक भी दिखाने की कोशिश करता है जहां संगीत और भौतिकी जैसी दो जटिल दुनियाएं एक बिन्दु पर थिरकती रहती हैं।

समय का संक्षिप्त इतिहास, 'अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' जैसी लोकप्रिय प्रसिद्ध किताब से स्टीफन हॉकिंग दुनिया भर में एक जाना पहचाना नाम चुके हैं। 1993 में दूसरी किताब 'ब्लैक होल्स एंड बेबी यूनिवर्स...' के बाद 2001 में उसकी किताब आयी 'द युनिवर्स इन अ नटशैल' और इसने भी तहलका मचा दिया। रिकॉर्ड बिक्री है। यहां बताना प्रासंगिक होगा कि गैलिलियो की मृत्यु के तीन सौ साल बाद आठ जनवरी 1942 को जन्मे हॉकिंग शारीरिक रूप से अपाहिज और बोलने या चलने फिरने में असमर्थ हैं। उनके लिए एक खास किस्म की चेयर तैयार की गयी है जिस पर कई अत्याधुनिक उपकरणों के साथ कंप्यूटर लगा है। हॉकिंग के कंप्यूटर को एक स्पीच सिंथेसाइज़र प्रणाली से जोड़ा गया है। हॉकिंग हाथ पर बंधे एक स्विच को संचालित कर कंप्यूटर स्क्रीन पर अंकित शब्दों के मेनू से एक एक कर शब्द चुनते हैं (सिर या आंखों की मूवमेंट से भी शब्दों को चुना जा सकता है।) जब ये काम पूरा हो जाता है और हॉकिंग जो कहना चाहते हैं वो निर्मित कर लेते हैं तब वो उसे स्पीच सिंथेसाइज़र को भेज देते हैं। वहां से फिर इस निराले विज्ञानी के विचार गूंजते हैं। इन्हें कंप्यूटर में सेव भी किया जा सकता है। इस तरह हॉकिंग दो किताबें और कई शोध पत्र प्रकाशित करा चुके हैं। हॉकिंग एक मिनट में पंद्रह शब्द बना लेते हैं। सामान्य ढंग से बोले जाने की तुलना में इस प्रक्रिया से दस गुना ज्यादा समय लगता है। इस तरह एक अत्यंत घातक बीमारी एएलएस (amyotrophic lateral sclerosis- जिसे मल्टीपल स्क्लेरोसिस यानी एमएस या मोटर न्यूरोन डिजीज़) का मरीज़ और फिर न्यूमोनिया के एक घातक हमले के इलाज के दौरान आवाज़ गंवा चुका शख्स, चिकित्सा विज्ञान के दंभ को चिढ़ाता सबसे ज्यादा चमत्कृत कर देने वाले विज्ञान यानी कॉस्मोलोजी की गुत्थियां सुलझाने में व्यस्त है। ये जिद इतनी इस्पाती है कि डॉक्टरों के खारिज कर दिए जाने के बावजूद हॉकिंग न सिर्फ अच्छे भले हैं बल्कि उनके तीन बच्चे भी हैं। जबकि धुरंधर न्यूरोसर्जनों का दावा था कि अगर महोदय बच भी गए तो बच्चे किसी सूत में पैदा नहीं कर सकते। हॉकिंग का एक पोता भी है।

बीबीसी रेडियो 4 के कार्यक्रम 'डेजर्ट आईलैंड डिस्क' का प्रसारण 1942 में शुरू हुआ था और ये रेडियो पर सबसे लंबी अवधि तक बजने वाला रिकार्ड कार्यक्रम है। गिनीज़ बुक में इसका नाम दर्ज है। अब इसकी स्थिति ब्रिटेन में राष्ट्रीय संस्थान जैसी है मशहूर रेडियो प्रस्तोता, लेखक उपन्यासकार और नाटककार रॉय प्लोमले ने इसकी संकल्पना तैयार की थी। प्रोग्राम के सबसे पहले प्रेजेंटर वही थे। 1985 में प्लोमले के निधन के बाद माइकल पार्किन्सन ने इसे पेश किया। 1988 में ये जिम्मेदारी संभाली एक और मशहूर रेडियो पत्रकार स्यु लावले ने। वो 18 साल तक इसे पेश करती रहीं। स्टीफन हॉकिंग का प्रस्तुत साक्षात्कार उन्हीं का लिया हुआ है। अगस्त 2006 से उनकी जगह ली है युवा पत्रकार क्रिस्टी यंग ने।

कार्यक्रम के मेहमानों का दायरा बहुत फैला हुआ रहा है। प्रोग्राम के तहत कई लेखकों, कलाकारों संगीतकारों फिल्म अभिनेताओं निर्देशकों खेल की हस्तियों कामेडियनों रसोईयों बागवानों शिक्षकों नर्तकों नेताओं शाही घरानों के लोगों कार्टूनिस्टों और वैज्ञानिकों के साक्षात्कार लिए जा चुके हैं। इंटरव्यू में बातों बातों में ऐसा समां बांधा जाता है कहना चाहिए कि ऐसा निराला टॉकिंग एंबिअंस क्रिएट किया जाता है कि वो एक रेडियो स्टूडियो नहीं बल्कि साक्षात्कार के लिए बुलाए गए मेहमान के ख्यालों की कोई जगह है। भौतिकी की हाइपरस्पेस जैसी कोई जगह मेहमानों को पात्रों के रूप में लाया जाता है और उनसे पूछा जाता है कि अगर उन्हें किसी निर्जन द्वीप में अकेला छोड़ दिया जाए तो अपने साथ वे संगीत के कौन से आठ रिकॉर्ड्स ले जाना चाहेंगे। काल्पनिक रूप से एक ऐसी चीज़ भी विलासिता (लक्जरी) के लिए ले जाने की छूट है जिसका जीवित वस्तु जगत से कोई संबंध न हो। बड़ी मात्रा में शैम्पेन ले जाने की छूट भले ही हो! (ये भी काल्पनिक) साथ ले जाने के लिए उनकी पसंद की कोई किताब है (ये मान लिया गया है कि एक धार्मिक पुस्तक-कुरान या बाइबल या उसी स्तर का अन्य ग्रंथ-वहां पहले से है और इनके अलावा शेक्सपियर का समूचा काम तो है ही) ये कल्पना भी कर ली जाती है कि संगीत सुनने की व्यवस्था वहां उपलब्ध है। ये भी बताते चलें कि पिछले साठ साल में आए मेहमानों की पसंद के संगीत में बीटोफेन की नवीं सिंफनी का अंतिम चरण 'द ओड ऑफ ज्वॉय' रहा है।

जब ये कार्यक्रम पहले पहल शुरू हुआ था तो उन दिनों इसका परिचय देते हुए शुरूआत में कहा जाता है। ...मान लें कि वहां एक ग्रामोफोन है और उसे चलाने के लिए अनगिनत मात्रा में सुईया उपलब्ध हैं। अब सौर ऊर्जा से चालित एक सीडी प्लेयर की कल्पना कर ली गयी है कि उसके ज़रिए कार्यक्रम में किरदार यानी मेहमान संगीत सुन सकेंगे। ये प्रोग्राम, साप्ताहिक है और मेहमानों की पसंद की सीडी साक्षात्कार के दरम्यान चलायी जाती है। प्रोग्राम की मियादा आमतौर पर चालीस मिनट रहती है। लेकिन स्टीफन हॉकिंग का ये इंटरव्यू अपवाद रहा जो इस अवधि से ज्यादा देर तक रिकॉर्ड किया गया। ये इंटरव्यू 1992 के क्रिसमस दिवस पर प्रसारित हुआ था। लेकिन कोई 15 साल पहले का ये इंटरव्यू अपनी जीवंतता के लिए मिसाल बन गया है।

कई मामलों में स्टीफन आप निर्जन द्वीप के अकेलेपन को पहले से ही समझते हैं, सामान्य भौतिक जीवन से कटे हुए और संचार के प्राकृतिक साधनों से वंचित, आपके लिए ये कितना अकेलापन है?

मैं नहीं समझता कि मैं सामान्य जिंदगी से कटा हुआ हूँ। और मैं नहीं सोचता कि मेरे आसपास के लोग कहेंगे कि मैं ऐसा था। मैं खुद को अपाहिज व्यक्ति नहीं मानता-सिर्फ इतना कि मेरी मोटर न्यरोन्स में कुछ गड़बड़ियां हैं, समझिए कि मैं कलर ब्लाइंड हूँ। मुझे लगता है कि मेरी जिंदगी स्वाभाविक नहीं कही जा सकती लेकिन आत्मिक तौर पर मैं महसूस करता हूँ कि ये सामान्य है।

और तो और इस कार्यक्रम के अन्य किरदारों से अलग आप खुद को पहले ही साबित कर चुके हैं कि आप मानसिक और बौद्धिक तौर पर आत्मनिर्भर हैं, कि खुद को व्यस्त रखने के लिए आपके पास कई सिद्धांत और प्रेरणा हैं।

मुझे लगता है कि मैं कुदरती तौर पर थोड़ा अंतर्मुखी हूँ और संचार में मेरी मुश्किलों ने मुझे खुद पर

निर्भर रहने को बाध्य किया है। लेकिन मैं छुटपन से बहुत बातूनी था। खुद को जागृत करने के लिए मुझे अन्य लोगों से बातचीत की ज़रूरत रहती है। अपने विचार दूसरों को समझाने से मुझे अपने काम में बड़ी मदद मिलती है। भले ही उनसे मुझे कोई सुझाव नहीं मिलते लेकिन दूसरों को समझाने के लिए मुझे जब अपने विचारों को व्यवस्थित करना होता है तो इससे कई बार मुझे आगे का रास्ता दिख जाता है।

लेकिन स्टीफन भावनात्मक भरपाई का क्या? कुशाग्र भौतिकविद् को भी ये जानने के लिए दूसरों की ज़रूरत पड़ती है।

भौतिकी यूं तो बहुत अच्छी है लेकिन ये पूरी तरह से ठंडी है। मैं सिर्फ भौतिकी से अपनी जिंदगी नहीं चला सकता था। दूसरों की तरह, मुझे भी उष्णता, प्रेम और निष्ठा की दरकार है। एक बार फिर मैं बहुत भाग्यशाली हूँ, मेरी जैसी अयोग्यताओं वाले दूसरे लोगों की अपेक्षा कहीं ज्यादा भाग्यशाली कि मुझे बड़े पैमाने पर प्यार और अपनापन नसीब हुआ है। इस माने में संगीत भी मेरे लिए बहुत अहम है।

ये बताएं कि कौन सी चीज़ से आपको ज्यादा खुशी मिलती है। भौतिकी या संगीत?

मुझे कहना पड़ेगा कि भौतिकी में जब मैं कुछ न कुछ खोजता और हासिल करता रहता हूँ तो उससे मुझे जितनी खुशी मिलती है उतनी संगीत से नहीं। लेकिन इस तरह की कामयाब बातें किसी के कैरियर में चुनिंदा ही होती हैं, जबकि डिस्क तो जब चाहे बजायी जा सकती है।

और पहला रिकॉर्ड जो आप अपने निर्जन द्वीप पर बजाना चाहते हैं?

पूलांगक (फ्रांसीसी संगीत रचनाकार) का 'ग्लेरिया', मैंने पहली बार इसे कोलोराडो के एस्पन में पिछली गर्मियों में सुना था। एस्पन यूं तो स्काई रिसार्ट है लेकिन गर्मियों में वहां भौतिकी पर बैठकें होती हैं। फिजिक्स सेंटर के साथ वाला दरवाजा एक विशाल टेंट में खुलता है जहां संगीत महोत्सव किया जाता है। आप यहां जब इस बात पर सिर खपा रहे होते हैं कि ब्लैक होल के गायब होने के बाद क्या होता है उसी दौरान आप रिहर्सल की आवाज़ें सुन सकते हैं। ये आदर्श स्थिति है। इसमें मेरी दो प्रमुख खुशियां मिल जाती हैं, भौतिकी और संगीत। अगर ये दोनों मुझे मेरे वीरान टापू पर मुहैया करा दी जाएं तो मैं यहां से निकाला जाना नहीं चाहूंगा। माने तब तक जब तक कि मैं सैद्धांतिक भौतिकी में ऐसी कोई खोज न कर लूं जो दुनिया को बताने लायक हो। ई-मेल से मुझे मेरे फिजिक्स के पर्चे मिल जाएं इसके लिए शायद मुझे टापू पर एक सैटेलाइट डिश तो मुश्किल मिलेगी, ये नियमों के खिलाफ होगा।

शारीरिक कमियों को रेडियो छिपा लेता है लेकिन इस मौके पर ये तो कुछ और छिपा रहा है। स्टीफन, सात साल पहले आपकी आवाज़ चली गयी, क्या आप बताएं कि हुआ क्या था?

मैं जेनेवा में था। 1985 की गर्मियों की बात है। वैगनर का 'रिंग' ऑपेरा देखने के लिए मैं जर्मनी के बेरुश जाने की तैयारी कर रहा था कि तभी न्यूमोनिया ने मुझे जकड़ लिया, मुझे फौरन अस्पताल ले जाया गया। जेनेवा के अस्पताल वालों ने मेरी पत्नी को सलाह दी कि लाइफ सपोर्ट मशीन को चालू रखना बेकार है। लेकिन वो सुनने को राजी नहीं हुईं। मुझे विमान से केंब्रिज के एडिनब्रूक्स अस्पताल लाया गया, जहां रोजर ग्रे नाम के एक सर्जन ने मेरे गले का ऑपरेशन (ट्रैकियोटॉमी) किया। उस ऑपरेशन से मेरी जिंदगी तो बच गयी लेकिन मेरी आवाज़ जाती रही।

लेकिन उस दौरान तो आपकी आवाज़ भरने लगी और समझ नहीं आता था कि आप क्या बोल रहे हैं। है न?! बोलने की क्षमता तो लगता है आखिरकार आपसे यूं भी बिछुड़ने वाली थी, क्यों?

भले ही मेरी आवाज़ डूब रही थी और उसे समझना मुश्किल था तो भी मेरे नज़दीक के लोग मुझे समझ लेते थे। मैं दुभाषिए की मदद से सेमिनार में बोलता था और मैं वैज्ञानिक पर्चे डिक्टेट कर सकता था। लेकिन ऑपरेशन के बाद के कुछ समय तक तो मैं बरबाद हो गया था। मुझे महसूस हुआ कि अगर मुझे मेरी आवाज़ वापस न मिली तो जीना बेकार है।

तभी कैलिफोर्निया के एक कंप्यूटर विशेषज्ञ ने आपकी व्यथा के बारे में पढ़ा और आपको एक आवाज़ भेज दी। ये कैसे काम करती है?

उसका नाम था वॉल्ट वोल्तोज़। उसकी सास की हालत भी मेरी तरह थी, उसके लिए उसने बातचीत में मदद के लिए एक कंप्यूटर प्रोग्राम विकसित किया था। करसर स्क्रीन पर घूमता रहता है। अपनी पसंद के विकल्प पर इसे लाते ही एक स्विच चलाना पड़ता है, सिर या आंखों को घुमाकर या जैसे मेरे मामले में, हाथ से। इस तरह स्क्रीन के निचले हिस्से में अंकित शब्दों को चुना जा सकता है। जो आप कहना चाहते हैं एकबारगी उसे निर्मित कर लेने के बाद उसे एक स्पीच सिंथेसाइज़र को भेज दिया जाता है या डिस्क पर सेव कर लिया जाता है।

लेकिन ये तो एक धीमी प्रक्रिया है।

हां ये धीमा तो है, अंदाज़न ये रफ़्तार सामान्य बोलचाल की रफ़्तार का दसवां हिस्सा है। लेकिन स्पीच सिंथेसाइज़र स्पष्ट आवाज़ निकालता है, मेरी पहले की आवाज़ से ज्यादा स्पष्ट। ब्रिटेन के लोग इसका लहजा अमेरिकी बताते हैं लेकिन अमेरिकी कहते हैं ये स्कैनडिनेवियाई या आयरिश है। पर ये जो भी हो, सभी इसे समझ लेते हैं। मेरे बड़े बच्चे मेरी आवाज़ के ख़राब होने के साथ उसी मौलिक लहजे को समझने लगे थे लेकिन मेरा सबसे छोटा बेटा जो मेरे ऑपरेशन के समय महज़ छह साल का था उससे पहले मुझे कभी नहीं समझ पाता था। अब उसे कोई दिक्कत नहीं है। मेरे लिए इस बात के बड़े माने हैं।

इसके माने ये भी हैं कि आपके पास किसी भी इटरव्यू लेने वाले के सवालों को भली भांति परखने का बेहतर समय रहता है और आपको जवाब तभी देने की ज़रूरत है जब आप ठीक से तैयार हो जाएं, क्या ऐसा नहीं है।

मोटे तौर पर इस तरह के रिकॉर्डेड कार्यक्रमों में सवालों पर पहले से ग़ौर कर लिए जाने से मदद मिलती है, इससे होता ये भी है कि मैं रिकार्डिंग टेप के कई घंटे इस्तेमाल नहीं करता। इस तरह से इससे मेरे पास ज़्यादा नियंत्रण रहता है, लेकिन मैं वास्तव में अनायास सवालों के जवाब देना पसंद करता हूँ। सेमिनारों और लेक्चरों के बाद मैं यही करता हूँ।

लेकिन जैसा कि आपने कहा, इस प्रक्रिया का मतलब आपके पास नियंत्रण रहता है और मुझे मालूम है कि ये बात आपके लिए काफी अहम है। आपका परिवार और आपके दोस्त कभी कभार आपको अड़ियल या बॉसपना झाड़ने वाला शख्स कहते हैं। इस पर क्या आप कुछ कहना चाहेंगे कि आप ऐसे नहीं हैं।

जिस किसी में भी सोचने की क्षमता है उसे कभी कभार अड़ियल या ज़िद्दी कहा ही जाता है। मैं तो ये कहूंगा कि मैं दृढ़ निश्चयी हूँ। अगर मैं साफ़तौर पर इरादों का पक्का न होता तो आज यहां न होता।

क्या आप हमेशा से ऐसे ही थे।

मैं अपने जीवन पर उसी स्तर का नियंत्रण चाहता हूँ जैसे अन्य लोगों का होता है। आमतौर पर होता

ये है कि विकलांगों की जिंदगी दूसरे लोग चाहते हैं। कोई भी शारीरिक रूप से समर्थ व्यक्ति ये नहीं चाहेगा।

चलिए आपका दूसरा रिकॉर्ड चलाया जाए।

ब्राह्मस का वॉयलिन कन्सर्ट, ये पहला एलपी था जिसे मैंने खरीदा। 1957 की बात है जब 33 आरपीएम के रिकॉर्ड्स ब्रिटेन में प्रकट हुए ही थे। रिकॉर्ड प्लेयर खरीदना मेरे पिता को फिजूलखर्ची लगता था लेकिन मैंने उन्हें जोर देकर मनाया कि मैं कुछ पार्ट्स खरीद कर उन्हें असेंबल कर एक प्लेयर का जुगाड़ कर दूंगा। ये बात उन्हें किसी यार्कशायर वाले की तरह जंच गयी। एक पुराने 78 ग्रामोफोन के केस में मैंने टर्नटेबल और एम्प्लीफायर रख दिए। अगर मैं इसे संभाले रहता तो आज ये बेशकीमती होता।

रिकॉर्ड प्लेयर बना लेने के बाद, मुझे उस पर बजाने के लिए कुछ चाहिए था। एक स्कूली दोस्त ने ब्राह्मस वॉयलिन के रिकॉर्ड की सलाह दी। क्योंकि हमारे स्कूली सर्किल में ये वाला किसी के पास नहीं था। मुझे याद है कि इसकी कीमत 35 शैलिंग थी जो उस ज़माने में बहुत ज्यादा थी, ख़ासकर मेरे लिए। रिकॉर्ड के अब तो काफी ऊँचे दाम हो गए हैं। लेकिन वास्तव में ये फिर भी काफी कम कीमतें हैं।

जब पहली बार एक दूकान पर मैंने ये रिकॉर्ड सुना मुझे लगा कि ये विचित्र आवाज़ थी। और मैं तय नहीं कर पा रहा था कि मुझे ये पसंद है या नहीं। लेकिन मुझे कहना पड़ेगा कि अंदर से मैं महसूस कर रहा था कि ये रिकॉर्ड मुझे पसंद है। कई साल गुज़र जाने के बाद भी लगता है कि मुझे इसकी बहुत ज़रूरत है। मैं अभी मंद गति का शुरुआती हिस्सा प्ले करूंगा।

आपके एक पुराने पारिवारिक मित्र ने कहा है कि जब आप लड़के थे आपका परिवार और मैं अगर कोट करूँ, 'बहुत बुद्धिमान बहुत समझदार और बहुत अजीबोगरीब था।' जब आप पीछे मुड़कर देखते हैं तो क्या ये विवरण ठीक लगता है आपको।

मैं ये टिप्पणी तो नहीं करूंगा कि मेरा परिवार बुद्धिमान था या नहीं, लेकिन अपने को हमने कभी अजीबोगरीब नहीं माना। मुझे लगता है कि सेंट अल्बान्स के रहने जीने के तौर तरीकों की वजहसे हम वैसे दिखते होंगे। जब हम वहां रहते थे तो वो जगह ऊबारू और भदेस थी।

और आपके पिता ट्रॉपिकल मेडेसिन (उष्णकटिबंधीय) देशों में होने वाली बीमारियों के विशेषज्ञ थे।

मेरे पिता ने ट्रॉपिकल मेडेसिन में रिसर्च की थी। नई दवाओं का परीक्षण करने वो कई बार अफ्रीका जाते थे।

तो क्या आपकी मां का आप पर ज्यादा असर है। वो असर कैसा था..

नहीं, मेरे पिता का मुझ पर ज्यादा प्रभाव था। मैंने उनको अपने मॉडल के रूप में देखा। क्योंकि वो वैज्ञानिक शोधकर्ता थे। मैं सोचता था कि बड़े हेने पर वैज्ञानिक शोध करना ही स्वाभाविक बात है। एक अकेला अंतर ये था कि मैं चिकित्सा और जीव विज्ञान की तरफ आकर्षित नहीं हुआ क्योंकि दोनों बहुत अपर्याप्त और विवरणात्मक थे। मैं कुछ ज्यादा बुनियादी चीज़ चाहता था और भौतिकी में मुझे वो चीज़ मिल गयी।

आपकी मां ने कहा है कि आपमें हमेशा हैरानी का एक तीव्र बोध रहा है। उन्होंने कहा : 'मैं देखती कि तारे उसे खींच लेते थे।' क्या आपको इसकी याद है।

मुझे याद है कि एक बार लंदन में देर रात मैं घर लौट रहा था। उन दिनों पैसे बचाने के लिए आधी

रात को सड़कों की बत्तियां बुझा दी जाती थीं। मैंने रात के आकाश को देखा, वैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। तारों का काफ़िला मेरे सामने से गुज़र रहा था। मेरे वीरान टापू पर कोई स्ट्रीट लाइट नहीं होगी लिहाज़ा मैं तारों को भली भांति देख सका।

तीसरा रिकॉर्ड चलाएँ?

ऑक्सफोर्ड में जब मैं अंडरग्रेजुएट था, मैंने एल्डस हक्सले का उपन्यास 'प्ल्यांट काउंटर प्ल्यांट' पढ़ा। उसे 1930 के दशक की ज़ांकी बताया गया था और उसमें पात्रों की भरमार थी। उनमें से ज़्यादातर तो महज़ 'कार्डबोर्ड' थे लेकिन एक ऐसा किरदार भी था जो ज़्यादा मानवीय लगता था और जाहिरा तौर पर उसमें हक्सले की खुद की छवि थी। उपन्यास में वह सर ओसवालड मोज़ले के चरित्र पर आधारित एक पात्र को मार डालता है जो बरतानी फासिस्टों का मुखिया था। फिर वह अपनी पार्टी को बता देता है कि उसने ये काम कर दिया है और ये बताकर बीटोफेन के स्ट्रिंग क्वारटेट (चतुष्टय) – ओपस 132 का रिकॉर्ड ग्रामोफोन पर बजाना शुरू कर देता है। संगीत के तीसरे मोड़ के बीचोंबीच दरवाज़े पर दस्तक होती है। वह दरवाज़ा खोलने उठता है और फासिस्टों के हाथों मारा जाता है।

ये वाकई बहुत बुरा नॉवल है लेकिन संगीत के अपने चयन पर हक्सले सही थे। अगर मुझे पता चलता कि ज्वार भाटे से भरी कोई बेकाबू लहर मेरे वीरान टापू को निकलने बड़ी आ रही है तो मैं बीटोफेन के इसी क्वारटेट (चतुष्टय) का तीसरा चरण बजाता।

आप ऑक्सफोर्ड तक गए, यूनिवर्सिटी कॉलेज तक, गणित और भौतिकी पढ़ने जहां आपने अपने खुद के हिसाब से पूरे दिन में करीब एक घंटा ही अपने काम में लगाया। कहा तो ये भी जाता है कि आपने ख़ूब नौका विहार किया, बीयर पी और लोगों के साथ कुछ मस्ती में बेहूदा मजाक भी किए। आपकी क्या समस्या थी। आपका ध्यान काम पर क्यों नहीं लगता था।

ये पचास के दशक के अंत की बात है। और अधिकांश युवाओं का एस्टेब्लिशमेंट से मोहभंग हो गया था। बेतहाशा आराम और ऐय्याशी के अलावा कुछ भी नहीं सूझता था। उस समय कंज़रवेटिव अपना तीसरा चुनाव इस नारे के साथ जीत कर आए ही थे कि 'इतन अच्छे हालात आपको कभी नहीं मिले।' लेकिन मैं और मेरे कई समकालीन, जिंदगी से ऊब गए थे।

फिर भी आप उन समस्याओं को चंद घंटों में सुलझा लेते थे जो आपके साथी छात्र हफ्ते लगाकर भी नहीं कर पाते थे। उन्हें शायद मालूम था और जो उन्होंने माना भी है कि आपके पास असाधारण प्रतिभा थी। क्या आपको ये बात पता थी, क्या कहेंगे आप।

ऑक्सफोर्ड में भौतिकी का तत्कालीन कोर्स हास्यास्पद रूप से सरल था। बिना किसी लेक्चर में जाए, सप्ताह में एक या दो ट्यूटोरियल अटेंड कर किसी का भी बेड़ा पार हो जाता, बहुत ज़्यादा तथ्य याद रखने की ज़रूरत नहीं थी, सिर्फ कुछ समीकरणों।

लेकिन क्या ये ऑक्सफोर्ड की बात नहीं जब आपने पहली बार ये नोट किया कि आपके हाथ और पांव ठीक वैसा नहीं कर रहे हैं जैसा कि आप उनसे कराना चाहते थे। उस समय ये बात आपने खुद को किस तरह समझायी।

वास्तव में जो पहली चीज़ मैंने नोट की, वो थी कि मैं पतवार वाली नाव को ठीक से नहीं खे पा रहा हूँ। फिर एक बार मैं कॉलेज में जूनियर कॉमन रूम की सीढ़ियों से बुरी तरह गिर गया था। इस घटना के बाद मैं कॉलेज के डॉक्टर के पास गया क्योंकि मैं चिंतित था कि कहीं मुझे दिमागी चोट तो नहीं आयी। लेकिन

उसे लगा कि कोई गड़बड़ नहीं थी और उसने मुझे बीयर कम करने की सलाह दी। ऑक्सफोर्ड में फाइनल इम्तहान के बाद मैं गर्मियों में पर्शिया चला गया। जब मैं लौटा तो निश्चित रूप से कमजोर हो गया था, लेकिन मैंने सोचा कि पेट बिगड़ जाने से मेरा ये हाल हुआ होगा।

लेकिन किस मोड़ पर आपने आखिरकार मान लिया कि कुछ वाकई गड़बड़ है और फिर चिकित्सा परामर्श लेने का फैसला किया।

मैं उस वक्त कैंब्रिज में था और क्रिसमस में घर चला गया था। 1962-63 का वो कड़ी सर्दी का मौसम था। मेरी माँ ने मुझे जोर देकर कहा कि जाओ सेंटअल्बान्स की झील में स्केट कर आओ। जबकि मैं जानता था कि मैं वास्तव में इस हालत में नहीं था। मैं गिर पड़ा और उठने में मुझे बहुत दिक्कत हुई। मेरी माँ ने महसूस किया कि कहीं कुछ गड़बड़ है। वो मुझे फैमिली डॉक्टर के पास ले गयी।

और तब अस्पताल में तीन हफ्ते... वहां आपको और बुरी खबर बतायी गयी।

असल में वो लंदन का बार्ट्स अस्पताल था। क्योंकि मेरे पिता उसी से जुड़े थे। मैं वहां दो सप्ताह रहा, मुझ पर कई परीक्षण हुए लेकिन वहां मुझे ये कभी नहीं बताया गया कि माजरा क्या है, सिवा इसके कि ये एमएस (मल्टीपल स्क्लेरोसिस) नहीं है और कि ये कोई टिपिकल केस भी नहीं है। मुझे ये नहीं बताया गया कि ठीक होने की क्या संभावनाएं हैं। लेकिन ये अनुमान तो मैंने लगा ही लिया कि संभावनाएं बहुत क्षीण हैं, इसलिए मैं पूछना नहीं चाहता था।

आपके बारे में पढ़ते हुए स्टीफन, करीब करीब ऐसा लगता है कि मौत की सजा जो आपके लिए तय कर दी गयी थी कि आप दो चार साल में दुनिया से चल बसेंगे, इससे आप जाग गए, और मेरे ये कहने से आपको अगर अच्छा लगे कि, आपको इससे जीवन पर ध्यान केंद्रित करने का मौका मिला।

उसका मुझ पर पहला प्रभाव तो अवसाद का था। लगता था बहुत तेजी से मेरी हालत बिगड़ती जा रही है। कुछ भी करने का या अपनी पीएचडी पर काम करने को कोई मतलब नहीं रह गया था क्योंकि मैं नहीं जानता था कि उसे पूरा करने के लिए मैं उतनी देर जिंदा भी रह पाऊंगा। लेकिन तभी चीजों में कुछ सुधार होना शुरू हो गया। धीरे धीरे ये हालत और बढ़ती गयी और मैंने अपने काम में तरक्की की शुरुआत कर दी, विशेषकर ये साबित कर दिखाने में कि ब्रह्मांड की शुरुआत निश्चित रूप से महाविस्फोट से हुई होगी।

आपने अपने एक साक्षात्कार में भी कहा है कि आप खुद को बीमारी से पहले के दिनों के मुकाबले अब ज़्यादा खुश पाते हैं।

मैं वाकई अब बहुत खुश हूँ। मोटर न्यूरान बीमारी की चपेट में आने से पहले मैं जिंदगी से ऊब गया था लेकिन आसन्न मृत्यु की आशंका ने मुझे अहसास करा दिया कि जिंदगी तो वाकई जीने लायक है। करने को इतना कुछ है। इतना कुछ कि कोई भी कुछ भी कर सकता है। मुझे उपलब्धि की एक सच्ची अनुभूति होती है कि मैंने अपनी हालत के बावजूद मनुष्य ज्ञान को समर्थ बनाने में एक अदना सा लेकिन महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ज़ाहिर है, मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ लेकिन अगर हर कोई कड़ी मेहनत करें तो उसे कुछ न कुछ जरूर हासिल हो सकता है।

क्या आप ये कहने का जोखिम उठा रहे हैं कि अगर आपको मोटर न्यूरान बीमारी न होती तो आप वो सब नहीं हासिल कर पाते जो आपके पास है.., या ये कहना सरलीकरण होगा।

नहीं। मैं नहीं मानता कि मोटर न्यूरोन बीमारी किसी के लिए भी फायदेमंद हो सकती है। लेकिन मेरे लिये दूसरों के मुकाबले कम नुकसानदेह इसलिए रही क्योंकि मैं जो काम करना चाहता था उससे ये बीमारी मुझे रोक नहीं पाई, और वो काम ये समझने की कोशिश करने का था कि ब्रह्मांड कैसे ऑपरेट होता है।

जब आप अपनी बीमारी से जूझ रहे थे आपकी एक अन्य प्रेरणा थी जेन वाइल्ड नाम की एक युवती जिसे आप एक पार्टी में मिले थे और प्यार कर बैठे थे जिसकी परिणति विवाह के रूप में हुई। अपनी कामयाबी का कितना श्रेय आप उन्हें, जेन को देते हैं।

उसके बिना मैं निश्चित रूप से ये सब मैनेज नहीं कर पाता। उसके प्रेम ने मुझे अवसाद की गहरी दलदल से उबार दिया। शादी से पहले मुझे एक अदद नौकरी चाहिए थी और अपनी पीएचडी को पूरा करना था। मैंने कड़ी मेहनत शुरू कर दी और पाया कि उसमें मुझे मजा आ रहा है। जैसे जैसे मेरी हालत बिगड़ती गयी जेन ने अकेले अपने दम पर मेरा ख्याल रखा। उस अवस्था में कोई भी हमारी मदद करने को तैयार न था और हम भी कतई इस हालत में नहीं थे कि मदद की कोई कीमत चुका सकें।

और एक साथ आप दोनों ने डॉक्टरों को हरा दिया, सिर्फ इस रूप में नहीं कि आप बाकायदा जिंदा रहे बल्कि इसलिए भी कि आपने संतानें भी पैदा कीं। 1967 में आपका बेटा रॉबर्ट पैदा हुआ, 1970 में बेटा लूसी और फिर 1979 में एक और बेटा-टिमोथी। कितने स्तब्ध थे डॉक्टर लोग।

वास्तव में जिस डॉक्टर ने मेरी बीमारी बतायी थी उसने तो मुझे पहले ही पल्ला झाड़ लिया। उसको लगता था कि इस मामले में कुछ भी नहीं किया जा सकता था। शुरूआती जांच के बाद मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा। नतीजतन मेरे पिता मेरे डॉक्टर बन गए। और मैं उनसे ही सलाह लेने लगा। उन्होंने मुझे बताया कि इस बीमारी के आनुवंशिक होने का कोई प्रमाण नहीं है। जेन ने मेरी देखभाल भी की और दो बच्चों की भी। 1974 में कैलिफोर्निया जाने पर ही हमें बाहरी मदद लेनी पड़ी, पहले एक छात्र था जो हमारे साथ रहता था और बाद में ये काम नर्सों से संभाला।

लेकिन अब आप और जेन एक साथ नहीं हैं।

मेरे ट्रेक्रियोटोमी ऑपरेशन के बाद मुझे 24 घंटे सुश्रुषा की जरूरत थी। उससे विवाह पर ज्यादा और ज्यादा दबाव पड़ता गया। नतीजतन मैं निकल आया और अब मैं कैंब्रिज में एक नए फ्लैट में रहता हूँ। अब हम अलग अलग रहते हैं।

आइये थोड़ा और संगीत सुना जाए।

बीटल्स का 'प्लीज़ प्लीज़ मी।' मेरे पहले चार अपेक्षाकृत गंभीर चयन के बाद मुझे कुछ हल्की राहत चाहिए। पॉप के बासी और भद्दे हो चुके माहौल में, मेरे और कईयों के लिए बीटल ग्रुप ताजा हवा के झोंके की तरह आया था। मैं रेडियो लक्ज़मबर्ग पर इतवार की शामों को टॉप टवेन्टी सुना करता था।

स्टीफन हॉकिंग, आपको इतने सारे सम्मान मिले, और इस बात का विशेष, उल्लेख जरूरी है कि आप कैंब्रिज में गणित के लुकेसियन प्रोफेसर के पद से सम्मानित भी किए गए हैं - ये वही पद हैं जो आइज़ैक न्यूटन ने भी ग्रहण किया था, इस सब के बावजूद फिर भी आपने अपने काम पर एक लोकप्रिय किताब लिखने का निश्चय किया, मेरे हिसाब से, महज़ एक बहुत ही साधारण वजह से। आपको पैसों की जरूरत थी।

मैंने सोचा था कि एक लोकप्रिय किताब से मैं कुछ ठीकठाक पैसे कमा लूंगा लेकिन 'अ ब्रीफ हिस्ट्री

ऑफ टाइम' लिखने की मुख्य वजह ये थी कि मुझे लिखने में मजा आया। मैं पिछले पच्चीस साल में हुई खोजों के बारे में उत्तेजित था और लोगों को मैं उनके बारे में बताना चाहता था। मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि ये किताब इतनी जबरदस्त बिकेगी।

यकीनन। इससे सारे रिकॉर्ड ध्वस्त कर दिए और बेस्ट सेलर लिस्ट में सबसे लंबे समय तक रहने का रिकॉर्ड भी इसी के नाम गिनीज़ बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज है। उस लिस्ट में ये अब भी है। किसी को अंदाज़ा नहीं कि दुनिया भर में कितनी कॉपियां बिकी होंगी लेकिन निश्चित रूप से ये संख्या एक करोड़ से ऊपर होगी। लोग ज़ाहिर है इसे खरीदते हैं। लेकिन एक सवाल बार बार पूछा जा रहा है कि क्या वे इस पढ़ते हैं।

मैं जानता हूँ बर्नार्ड लेविन उनतीसवें पेज पर अटक गए थे। लेकिन मैं जानता हूँ कि बहुत से लोग और गए होंगे। दुनिया भर में लोग मेरे पास आते हैं और बताते हैं कि उन्हें वो कितनी पसंद आयी। वे उसे पूरा न पढ़ पाए हों या जो कुछ भी पढ़ा हो वह समझ न आया हो लेकिन उन्हें एक विचार तो मिल ही गया है कि हम एक ऐसे ब्रह्मांड में रहते हैं जो ऐसे औचित्य भरे नियमों से संचालित है जिन्हें हम खोज सकते हैं और समझ सकते हैं।

ब्लैक होल की अवधारणा ही सबसे पहले लोगों की कल्पना को भा गयी और कॉस्मोलॉजी में लोगों का रुझान फिर बना। क्या आपने कभी उन तमाम तारामंडलियों को देखा है, यूँ कहें कि 'हिम्मत बांध कर वहां गए जहां इससे पहले कोई आदमी नहीं गया।' अगर हां तो क्या आपको मज़ा आया।

जब मैं किशोर था तो बहुत सा साइंस फिक्शन पढ़ता था। लेकिन अब जबकि मैं इसी क्षेत्र में काम करता हूँ तो अधिकांश गल्प विज्ञान मुझे सतही लगता है। अगर आपको इसे एक मुकम्मल तस्वीर का हिस्सा नहीं बनाना है तो हाइपर स्पेस ड्राइव और प्रकाश से संचालित आवाजाही पर लिखना बहुत आसान है। वास्तविक विज्ञान कहीं ज़्यादा रोचक है क्योंकि वाकई वहां यथार्थ में सब हो रहा है। भौतिकविदों से पहले गल्प विज्ञान लेखकों ने ब्लैक होल का कभी ज़िक्र नहीं किया। लेकिन अब हमारे पास उसके काफी तादाद में होने के बेहतर प्रमाण हैं।

अगर आप ब्लैक होल में गिर गए तो क्या होगा।

साइंस फिक्शन पढ़ने वाले हर शख्स को पता है कि वहां गिरने से क्या होता है। वहां गिरने से आपका कीमा बन जाता है। लेकिन ज़्यादा दिलचस्प बात ये है कि ये काले गड्ढे पूरी तरह से काले नहीं। एक स्थिर दर से वे कणों को और विकिरणों को वापस भेजते रहते हैं। इस वजह से काला गड्ढा धीरे धीरे वाष्पित होता रहता है। लेकिन अंतिम तौर पर ब्लैक होल और उसकी सामग्री का क्या होता है, ये पता नहीं चल पाया है। ये रिसर्च का एक रोचक क्षेत्र है लेकिन गल्प विज्ञान के लेखकों ने अभी तक इस पर ध्यान नहीं दिया है।

और आपने जिन विकिरणों का ज़िक्र किया वे ज़ाहिर है हॉकिंग रेडिएशन कहलाती हैं। ब्लैकहोल की खोज करने वाले आप नहीं थे फिर भी आप ये साबित कर आए हैं कि वे काले नहीं हैं। क्या ऐसा नहीं है कि पूर्व में की गयी इन खोजों की बदौलत ही आप ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में और नज़दीक जाकर सोचना शुरू कर पाए।

ब्लैक होल में बदलने के लिए एक तारे का सिकुड़ना कई मानों में ब्रह्मांड के फैलाव का उलट काल है। एक तारा एक निचले घनत्व वाली अवस्था से बहुत ऊंचे घनत्व वाली अवस्था में विघटित होता है। और

ब्रह्मांड एक बहुत ऊंचे घनत्व वाली अवस्था से निचले घनत्वों में फैलता जाता है। एक बहुत अहम अंतर ये है कि हम ब्लैक होल के बाहर और ब्रह्मांड के भीतर हैं। लेकिन दोनों की एक विशेषता है – तापीय विकिरण (थर्मल रेडिएशन)।

आप कहते हैं कि ब्लैक होल और उसके माल असबाब का अंतिम तौर पर क्या होता है, ये नहीं मालूम किया जा सकता है। लेकिन मुझे लगता है कि आपकी थ्योरी ये है कि जो कुछ भी ब्लैकहोल के भीतर हुआ, जो कुछ भी उसमें अदृश्य हुआ, चाहे वो एक अंतरिक्षयात्री क्यों न हो, वो सब आखिरकार हॉकिंग रेडिएशन के रूप में पुनर्चिकित (रिसाईकिल) हो जाएगा।

अंतरिक्ष यात्री की द्रव्यमान ऊर्जा, ब्लैक होल से उत्सर्जित विकिरण के तौर पर रिसाईकिल होगी। लेकिन अंतरिक्षयात्री खुद या जिन कणों से वो निर्मित है, वे ब्लैक होल से नहीं निकल पाएंगे। इसलिए सवाल ये है कि उसका क्या होता है। क्या वे नष्ट हो जाते हैं या वे अन्य ब्रह्मांड में निकल जाते हैं। यही वो बात है जो मैं शिद्वत से जानना चाहता हूँ, इसका मतलब ये नहीं कि मेरा इरादा उस काले गड्ढे में कूद जाने का है।

स्टीफन, क्या आप किसी पूर्वाभास (इंट्यूशन) के तहत काम करते हैं – कहने का मतलब ये कि आप किसी ऐसी थ्योरी तक पहुंचते हैं जिसे आप पसंद करते हैं और जो आपको आकर्षित करती है और फिर आप उसे साबित करने में जुट जाते हैं। या एक वैज्ञानिक के तौर पर आपको हमेशा एक नतीजे की तरफ का रास्ता तार्किक ढंग से तय करना पड़ता है और आप पूर्वानुमान लगाने की कोशिश कर जोखिम नहीं उठाते।

मैं पूर्वाभास पर बहुत भरोसा करता हूँ। मैं किसी नतीजे का अनुमान लगाने की कोशिश करता हूँ। लेकिन फिर मुझे वो साबित करना पड़ता है। और इस अवस्था में, कई बार ये पाता हूँ कि जो मैंने सोचा था वो सच नहीं है या मामला असल में कुछ और है जिसके बारे में मैंने सोचा ही नहीं था। इसी तरह मैंने ये पाया कि ब्लैक होल या काले गड्ढे पूरी तरह से काले नहीं हैं। मैं कुछ और साबित करना चाहता था।

और संगीत सुनें?

मोत्सार्ट हमेशा मेरे प्रिय संगीतकारों में रहे हैं। उन्होंने अविश्वसनीय पैमाने पर संगीत रचनाएं लिखी हैं। इस साल के शुरू में मेरे पचासवें जन्मदिन पर मुझे उनके समस्त काम की एक सीडी भेंट की गयी, दो सौ घंटे से ज्यादा की। मैं अब भी इसमें मुब्बिला हूँ। उनकी महानतम रचनाओं में से एक हैं- 'रेक्वीम।' मोत्सार्ट इसके पूरा होने से पहले ही चल बसे थे, और उनके एक शागिर्द ने इसे उनके छोड़े टुकड़ों से पूरा किया। जो रचना हम सुनेंगे ये इस रचना का वो अकेला हिस्सा है जिसे मोत्सार्ट ने अपने जीते जी लिपिबद्ध और संगीतबद्ध कर लिया था।

आपके सिद्धांतों का अति सरलीकरण करने के लिए और मुझे उम्मीद है स्टीफन आप मुझे इसके लिए क्षमा करेंगे, कि आप एक दौर में मानते थे जैसा कि मुझे समझ आता है कि उत्पत्ति का एक बिंदु है – महाविस्फोट। लेकिन आपने आगे कभी ये नहीं माना कि यही मामला था। अब आप मानते हैं कि कोई शुरूआत नहीं थी और न ही कोई अंत है, और ये कि ब्रह्मांड स्वनिर्धारित है। क्या इसका मतलब ये है कि उत्पत्ति जैसी कोई घटना नहीं हुई थी और इसीलिए ईश्वर की कोई जगह नहीं है।

जी हां आपने अति सरलीकृत कर दिया है। मैं अब भी ये मानता हूँ कि वास्तविक समय में ब्रह्माण्ड का प्रारंभ था, महाविस्फोट के रूप में। लेकिन एक दूसरी तरह का समय भी है, काल्पनिक समय, जो

वास्तविक समय के समकोण पर अवस्थित है जिसमें ब्रह्मांड का न प्रारंभ है न ही अंत। इसका अर्थ ये हुआ कि ब्रह्मांड की शुरुआत कैसे हुई, ये तय होगा भौतिकी के नियमों से। किसी को ये नहीं कहना पड़ेगा कि ईश्वर ने किसी ऐसे निरंकुश तरीके से ब्रह्मांड की रचना की जो हमारी समझ से बाहर हैं, ये इस बारे में कुछ नहीं करता कि ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं—इतना बताता है कि ईश्वर मनमानी नहीं कर सकता।

अगर इस बात की संभावना है कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है तो फिर आप उन चीजों के बारे में क्या कहेंगे जो विज्ञान से इतर हैं—प्रेम, विश्वास जो लोगों में रहता है और जो उनमें आपके लिए हैं और यकीनन आपकी अपनी प्रेरणा से भी जुड़ा है।

प्रेम, विश्वास और नैतिकता भौतिकी की अलग कैटगरी में आते हैं। आप भौतिकी के नियमों से ये नहीं बता सकते कि किसी आदमी को कैसा व्यवहार करना चाहिए। लेकिन ये उम्मीद की जा सकती है कि भौतिकी और गणित के तर्कसंगत विचार, नैतिकता को व्यवहार में लाने में किसी का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

लेकिन मेरे ख्याल से कई लोग ये मानते हैं कि आपने असरदार ढंग से ईश्वर की खिल्ली उड़ाई है। तो फिर क्या आप इस बात को नकार रहे हैं।

जो कुछ भी मेरे काम ने दिखाया है उसमें ये है कि आपको ये नहीं कहना पड़ता कि ईश्वर की मनमर्जी से ब्रह्मांड प्रकट हुआ। लेकिन आपके पास तब भी एक सवाल रहता है – ‘फिर भला ये ब्रह्मांड अस्तित्व में क्योंकि है’। अब ये सवाल ऐसा है कि आप चाहें तो इसका जवाब देने के लिए ईश्वर की परिभाषा गढ़ सकते हैं।

आइये, सातवां रिकार्ड बजाएं।

मुझे ऑपेरा बहुत पसंद हैं। मैंने सोचा था कि मेरी सभी आठों डिस्क, ऑपेरा वाली हों। ग्लक से लेकर मोत्सार्ट तक, वैगनर से होते हुए, वेर्डी और प्युचिनी तक। लेकिन अंत में मैं दो ही चुनता हूं। एक होना चाहिए वैगनर और दूसरा प्युचिनी। ‘तूरांदों’ उनका सर्वश्रेष्ठ ऑपेरा है लेकिन फिर देखिए कि इसे पूरा करने से पहले उनकी मृत्यु हो गयी। जो अंश मैंने चुना है उसमें प्राचीन चीन की एक राजकुमारी की कथा है कि कैसे उसका बलात्कार कर मंगोल उसे अपने साथ ले जाते हैं। इसका बदला लेने के लिए ‘तूरांदों’ अपने चहेतों से तीन सवाल पूछने जा रही है। अगर वे जवाब न दे पाए तो उन्हें फांसी पर लटका दिया जाएगा।

अभी तक स्टीफन आप अनुमान से तीस साल ज्यादा जी गए हैं। आपकी संतानें भी हैं जो कहा गया था कि आप कभी पैदा नहीं कर पाएंगे, आपने एक बेस्टसेलर लिख डाली है, दिक् और काल के बारे में वर्षों पुरानी मान्यताओं से भरे लोगों के मस्तिष्कों को आपने बदल डाला है। इस ग्रह से विदा होने से पहले आप और क्या करने की योजना बना रहे हैं स्टीफन।

ये सब इसीलिए मुमकिन हो सका क्योंकि मैं खुशकिस्मत रहा हूं कि मुझे भारी सहयोग मिलता रहा है। मैं जो कुछ हासिल कर पाया उससे खुश हूं। लेकिन जाने से पहले मैं बहुत कुछ करना चाहता हूं। मैं अपनी निजी जिंदगी के बारे में बात नहीं करूंगा लेकिन वैज्ञानिक तौर पर मैं ये जानना चाहता हूं कि ग्रेविटी और क्वांटम मैकेनिक्स को कैसे एकीकृत किया जाए। विशेष रूप से मैं ये जानना चाहता हूं कि वाष्पीकृत होने के बाद ब्लैक होल का क्या होता है।

और अब अंतिम रिकार्ड?

इसका उच्चारण करने में आपको मेरी मदद करनी होगी। मेरा स्पीच सिंथेसाइज़र अमेरिकी है और

फ्रांसीसी में ये निराश करता है। ये हैं Edith Piaf जो गा रहे हैं 'je ne regretted rien'. इसमें मेरी जिंदगी का निचोड़ है।

अब स्टीफन अगर आपको उन आठों रिकॉर्डों में से किसी एक को ही ले जाना हो तो वो कौन सा होगा।

वो मोत्सार्ट का 'रेक्वेम' होना चाहिए। मैं उसे तब तक सुन सकता हूँ जब तक कि मेरे डिस्क वॉकमैन की बैटरी जवाब न दे जाएं।

और आपकी किताब? ज़हिर है शेक्सपियर का संपूर्ण काम और बाईबल यहां पड़े हैं।

मैं सोचता हूँ कि मैं जॉर्ज इलियट की 'मिडिल मार्च' ले जाऊंगा। किसी ने, शायद वर्जीनिया वूल्फ ने, कहा कि ये किताब व्यस्कों के लिए हैं। मुझे नहीं पता कि मैं अभी बड़ा हो पाया हूँ या नहीं, लेकिन फिर भी मैं इसे पढ़ने की कोशिश करूंगा।

शिवप्रसाद जोशी से पहल के पाठक परिचित हैं। जर्मनी से दो साल बाद लौटकर वे अभी अनिश्चित राहों पर हैं। स्टीफन हाकिंग का यह दुर्लभ साक्षात्कार उन्होंने पहल के लिए तैयार किया। इसे रेडियो पर करोड़ों लोगों ने सुना है और यह बार-बार प्रसारित होता है। इसमें उनकी जीवनगाथा तो है ही ब्रह्मांड कैसे ऑपरेट होता है इन सवालों की भी उधेड़बुन है। भौतिकी के पंडित, अनीश्वरवादी, हाकिंग के साक्षात्कार का यह अनुवाद पहली बार हिन्दी में।